



ସୁରମହାତ୍ମା
ଶ୍ରୀଵୃଣୁ



ଶ୍ରୀଵୃଣୁ
ମହାତ୍ମା





୨୭୭। ଶ୍ରୀ ପଦମାତ୍ରା
ପ୍ରଧାନାମ୍ବର୍ଦ୍ଧୁଷ୍ଟମ୍ବା
ଚନ୍ଦ୍ରମାର୍ଗସମ୍ପର୍କକାର



अद्य। ॥ अद्यस्तु गुरुं प्रवृत्त्यामैत्यापि ॥
प्रमाणाद्यस्तु प्रकृत्या ॥ २५॥
योगास्त्रेषु विश्वात्माका ॥ एष तामृतं ॥
मां द्युप्तं तत्त्वं प्रसक्तम् ॥ तदेषु क्षमामालाकाम
द्वयं तत्त्वं विश्वात्मापर्याप्ता ॥ द्वयोऽप्युप्तं प्राप्तं ॥
॥ २६॥